List of New Course(s) Introduced

Department : *Hindi*

Programme Name : *M.A.*

Academic Year : 2021-22

List of New Course(s) Introduced

Sr. No.	Course Code	Name of the Course
1.	HIPATT1	भक्ति काव्य
2.	HIPATT2	हिदी निबंध
3.	HIPATT3	हिंदी साहित्य का इतिहास (आरम्भ से रीतिकाल)
4.	HIPATT4	भारतीय भाषाओँ की कहानियां
5.	HIPATO1	हिदी भाषा
6.	HIPBTT1	कथा साहित्य उपन्यास एवं नाटक
7.	HIPBTT2	रीतिकाव्य
8.	HIPBTD1	हिदी साहित्य का इतिहास आधुनिक काल
9.	HIPBTD2	भाषा विज्ञान
10.	HIPBTO1	हिंदी भाषा
11.	HIPCTT1	आदिकालीन काव्य
12.	HIPCTT2	आधुनिक काव्य
13.	HIPCTD1	आधुनिक विमर्श
14.	HIPCTD2	प्रयोजनमूलक हिंदी
15.	HIPCTD3	जनसंचार माध्यम
16.	HIPCTD4	हिंदी सिनेमा

17.	HIPDTT1	छायावादोत्तर काव्य
18.	HIPDTD1	काव्यशास्त्र
19.	HIPDTD2	लोक साहित्य
20.	HIPDTT2	शोध प्रविधि
21.	HIPDLD1	Dissertation/Project

अध्यक्ष / HOD
हिन्दी विभाग / Department of Hindi
गुरू घासीदास विश्वविद्यालय / G.G.V
बिलासपुर (छ.ग.) / Bilaspur (C.G.)

Minutes of Meetings (MoM) of Board of tudies (BoS)

Academic Year : 2019-20	
School	: *Arts*
Department	: *Hindi*
Date and Time	: *OCT. 10, 2021 – 11:30 AM*
Venue	: *E-Class Room*

अध्ययनमण्डल (BOS) की बैठक का कार्यवृत्त

- दिनांक **28/10/2021** को हिन्दी विभाग में गूगल मीट पर ऑनलाइन बैठक आयोजित की गई।
- बैठक में अध्ययनमण्डल समिति के समस्त सदस्यगण ऑनलाइन माध्यम से उपस्थित रहे।
- बैठक में प्रस्तावित स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम पर चर्चा की गई और इसे यथारूप में लागू करने की अनुशंसा की गई।

1. प्रो. देवेन्द्र नाथ सिंह आचार्य, विभागाध्यक्ष हिंदी विभाग, एवं अधिष्ठाता, कला अध्ययनशाला गुरु घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर (छ.ग.)
2. प्रो. खेम सिंह डहेरिया प्राध्यापक , हिंदी विभाग, इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय , अमरकंटक (म.प्र.) एवं मा. कुलपति (अटलबिहारी हिंदी विश्वविद्यालय भोपाल) (मान. कुलपतिजी द्वारा नामित सदस्य)
3. डॉ. गौरी त्रिपाठी सह प्राध्यापक, हिंदी विभाग, गुरु घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर (छ.ग)
4. डॉ. रमेश कुमार गोहे सहायक प्राध्यापक हिंदी विभाग, गुरु घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर (छ.ग.)
5. श्री मुरली मनोहर सिंह सहायक प्राध्यापक हिंदी विभाग, गुरु घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर (छ.ग.)

- बैठक में निम्नलिखित बिन्दुओं पर विचार किया गया.
- स्वीकृत **CBCS** प्रणाली की यथावत स्वीकृति
- समिति की बैठक में पाठ्यक्रम की **CBCS** प्रणाली पर परिचर्चा करते हुए अपनी सहमति प्रदान की गई जिसमें निम्नलिखित नई पाठ-योजनाओं को स्नातकोत्तर प्रतिष्ठा के पाठ्यक्रम में शामिल किया गया -

HIPATT1- भक्ति काव्य
HIPATT1 -भक्ति काव्य
HIPATT2 -हिदी निबंध
HIPATT3 -हिंदी साहित्य का इतिहास (आरम्भ से रीतिकाल)
HIPATT4-भारतीय भाषाओँ की कहानियां
HIPATO1-हिदी भाषा
HIPBTT1-कथा साहित्य उपन्यास एवं नाटक
HIPBTT2-रीतिकाव्य

HIPBTD1-हिदी साहित्य का इतिहास आधुनिक काल
HIPBTD2-भाषा विज्ञान
HIPBTO1-हिंदी भाषा
HIPCTT1-आदिकालीन काव्य
HIPCTT2-आधुनिक काव्य
HIPCTD1 -आधुनिक विमर्श
HIPCTD2 -प्रयोजनमूलक हिंदी
HIPCTD3 -जनसंचार माध्यम
HIPCTD4हिंदी सिनेमा
HIPDTT1-छायावादोत्तर काव्य
HIPDTD1 -काव्यशास्त्र
HIPDTD2-लोक साहित्य
HIPDTT2-शोध प्रविधि
HIPDLD1-Dissertation/Project

अध्यक्ष / HOD
हिन्दी विभाग / Department of Hind
गुरू घासीदास विश्वविद्यालय / G.G.V
बिलासपुर (छ.ग.) / Bilaspur (C.G.)

Signature & Seal of HoD

गुरु घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर (छ.ग.)

हिंदी विभाग

(कला अध्ययनशाला)

सत्र : 2021-22 एवं क्रमशः हेतु
संचालित पाठ्यक्रम
स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम के चयन आधारित स्तरीय प्रणाली
(Choice Based Credit System)
की सत्रीय व्यवस्था युक्त

28.10.2021
अध्यक्ष / HOD
हिन्दी विभाग / Department of Hindi
गुरु घासीदास विश्वविद्यालय / G.G.V.
बिलासपुर (छ.ग.) / Bilaspur (C.G.)

गुरु घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर (छ.ग.)
हिंदी विभाग
(कला अध्ययनशाला)

अध्ययनमण्डल (BOS) की बैठक का कार्यवृत्त

- दिनांक 28/10/2021 को हिन्दी विभाग में गूगल मीट पर ऑनलाइन बैठक आयोजित की गई।
- बैठक में अध्ययनमण्डल समिति के समस्त सदस्यगण ऑनलाइन माध्यम से उपस्थित रहे।
- बैठक में प्रस्तावित स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम पर चर्चा की गई और इसे यथारूप में लागू करने की अनुशंसा की गई।

बैठक में उपस्थित सदस्यों के हस्ताक्षर

अध्ययमंडल के सदस्यगण			**हस्ताक्षर**
01	प्रो. देवेन्द्र नाथ सिंह - आचार्य, विभागाध्यक्ष : हिंदी विभाग, एवं अधिष्ठाता, कला अध्ययनशाला, गुरु घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर (छ.ग.)	अध्यक्ष	[signature] 28.10.2021
(2)	प्रो. खेम सिंह डहेरिया - प्राध्यापक, हिंदी विभाग, इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय, अमरकंटक (म.प्र.) एवं मा. कुलपति (अटलबिहारी हिंदी विश्वविद्यालय भोपाल) (मान. कुलपतिजी द्वारा नामित सदस्य)	सदस्य	ऑनलाइन उपस्थित के साथ अनुमोदित
(3)	डॉ. गौरी त्रिपाठी - सह प्राध्यापक हिंदी विभाग,गुरु घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर (छ.ग)	सदस्य	[signature]
(4)	डॉ. रमेश कुमार गोहे - सहायक प्राध्यापक हिंदी विभाग, गुरु घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर (छ.ग.)	सदस्य	[signature]
(5)	श्री मुरली मनोहर सिंह - सहायक प्राध्यापक हिंदी विभाग, गुरु घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर (छ.ग.)	सदस्य	[signature]

अनुक्रमणिका

पाठ्यक्रम	पृष्ठ संख्या
पाठ्यक्रम परिचय	**04**
स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम (CBCS)	**09 TO 31**

पाठ्यक्रम परिचय

आज के युग में, जबकि मनुष्य की तमाम भौतिक या आत्मिक उपलब्धियों का महत्व इस बात पर निर्भर करने लगा है कि बाजार में उसकी उपयोगिता क्या और कितनी है। बाजार आज एक सर्वजेता, सर्वनियंता कारक शक्ति बन बैठा है। वह अपनी जरूरतों के लिए जितना निरंकुश है, उतना ही निर्मम भी। इसका प्रत्यक्ष प्रभाव हमारे पाठ्यक्रमों पर भी दिखाई देने लगा है। परम्परागत ढंग से पढ़े और पढ़ाये जा रहे मानविकी के तमाम विषय बाजार के इस मानदंड पर खरे नहीं उतर पाने के कारण एक-एक कर परिदृश्य से ओझल होते जा रहे हैं। हमेशा से साहित्य का सरोकार सिर्फ अपना वर्तमान ही नहीं रहा है, सुदूर इतिहास और भविष्य पर एक साथ टिकी साहित्य की दृष्टि मनुष्य की गरिमा का गान और उद्घोष करती आ रही है। मुक्तिबोध के शब्दों में कविता काल यात्री की तरह होती है। आगमिष्यति की गहन और गंभीर छाया लिए हुए वह जन चरित्री भी होती है।

गुरु घासीदास विश्वविद्यालय बिलासपुर छत्तीसगढ़ के हिंदी विभाग का यह पाठ्यक्रम साहित्य के इसी परिदृश्य से परिचित कराने का प्रयास है। यह जानते हुए कि पाठ्यक्रमों की एक सीमा होती है, विद्यार्थियों को अपने वर्तमान की चुनौतियों से भी रूबरू होना पड़ रहा है। हमने भरसक प्रयास किया है कि हिंदी के इस पाठ्यक्रम को वर्तमान सामाजिक सन्दर्भों से जोड़ते हुए इसके बाजार की नई-नई संभावनाओं को भी उद्घाटित किया जा सके। एक संस्कारित और सक्षम व्यक्तित्व के निर्माण में हिंदी साहित्य का महत्त्व वर्तमान के साथ-साथ नये भारत का भविष्य गढ़ने में भी समर्थ और संभावनाशील है।

आज अनिवार्य रूप से हिंदी बाजार की भाषा होती जा रही है, जबकि परम्परागत हिंदी का अपना बाजार नहीं के बराबर रह गया है। फिल्म, स्क्रिप्ट राइटिंग, पत्रकारिता, विज्ञापन आदि ढेर सारी चीजें आज के बाजार की अनिवार्य विवशताएं हैं। सूचना क्रांति के दौर में हिंदी व हिंदीतर साहित्य को कैसे पढ़ा जाए? इसे ध्यान में रखकर यह पाठ्यक्रम तैयार किया गया है। मौलिक होना महत्वपूर्ण है, लेकिन उसकी सार्थकता अनुकरणीय होने में ही है। हमें विश्वास है, कि हिंदी साहित्य और उसके समानांतर हिंदीतर भारतीय साहित्य में जो कुछ लिखा जा चुका है, उसका चयन और संयोजन अपनी तमाम सीमाओं के बावजूद इस पाठ्यक्रम में मौलिक भी है, और अनुकरणीय भी।

अध्ययन पाठ्यक्रम
प्रथम सेमेस्टर

क्र.	प्रश्न पत्र का स्वरूप	पाठ्यक्रम का शीर्षक	अंक निर्धारण	क्रेडिट
1	**Core**	भक्ति–काव्य HIPATT1	100/40 (Grade: O/P)	(4+1)
2	**Core**	हिंदी निबंध HIPATT2	100/40 (Grade: O/P)	(4+1)
3	**Core**	हिंदी साहित्य का इतिहास (आरम्भ से रीतिकाल) HIPATT3	100/40 (Grade: O/P)	(4+1)
4	**Core**	भारतीय भाषाओं की कहानियाँ HIPATT4	100/40 (Grade: O/P)	(4+1)
5	**Open Elective**	हिंदी भाषा HIPATO1	100/40 (Grade: O/P)	(4+1)
टोटल क्रेडिट अनिवार्य पाठ्यक्रम				**20**
टोटल क्रेडिट वैकल्पिक पाठ्यक्रम				**25**
प्रति सप्ताह कुल घंटे				**22**

द्वितीय सेमेस्टर

क्र.	प्रश्न पत्र का स्वरूप	पाठ्यक्रम का शीर्षक	अंक निर्धारण	क्रेडिट
1	Core	कथा साहित्य (उपन्यास एवं नाटक) HIPBTT1	100/40 (Grade: O/P)	(4+1)= 05
2	Core	रीतिकाव्य HIPBTT2	100/40 (Grade: O/P)	(4+1)= 05
3	Soft Core Eelective Internal choice	1. हिंदी साहित्य का इतिहास आधुनिक काल HIPBTD1 अथवा 2. भाषा विज्ञान HIPBTD2	100/40 (Grade: O/P)	(4+1)= 05
4	Open Eelective	आधार पाठ्यक्रम हिंदी भाषा HIPBTO1	100/40 (Grade: O/P)	(4+1)= 05
टोटल क्रेडिट अनिवार्य पाठ्यक्रम				10
टोटल क्रेडिट वैकल्पिक पाठ्यक्रम				10
प्रति सप्ताह कुल घंटे				20

तृतीय सेमेस्टर

क्र.	पत्र का स्वरूप	पाठ्यक्रम का शीर्षक	अंक निर्धारण	क्रेडिट
1	Core	आदिकालीन काव्य HIPCTT1	100/40 (Grade: O/P)	4+1=5
2	Core	आधुनिक काव्य HIPCTT2	100/40 (Grade: O/P)	4+1=5
3	Soft Core Elective Internal Choice	१. आधुनिक विमर्श HIPCTD1 अथवा २. प्रयोजनमूलक हिंदी HIPCTD2	100/40 (Grade: O/P)	4+1=5
4	Soft Core Elective Internal Choice	१. जनसंचार माध्यम HIPCTD3 अथवा २. हिंदी सिनेमा HIPCTD4	100/40 (Grade: O/P)	4+1=5
5. Other if any	साहित्य वार्ता HIPCLS1			02
टोटल क्रेडिट अनिवार्य पाठ्यक्रम				20
टोटल क्रेडिट वैकल्पिक पाठ्यक्रम				02
प्रति सप्ताह कुल घंटे				22

चतुर्थ सेमेस्टर

क्र.	पत्र का स्वरूप	पाठ्यक्रम का शीर्षक	अंक निर्धारण	क्रेडिट
1	Core	छायावादोत्तर काव्य HIPDTT1	100/40 (Grade: O/P)	4+1=5
2	Soft core elective Internal choice	1. काव्यशास्त्र HIPDTD1 अथवा 2. लोक-साहित्य HIPDTD2	100/40 (Grade: O/P)	4+1=5
3	Research methodology	शोध प्रविधि HIPDTT2	100/40 (Grade: O/P)	02
4.	Dissertation/Project Followed by seminar 01	HIPDLD1	100/40 (Grade: O/P)	06
टोटल क्रेडिट अनिवार्य पाठ्यक्रम				18
टोटल क्रेडिट वैकल्पिक पाठ्यक्रम				00
प्रति सप्ताह कुल घंटे				18

स्नातकोत्तर प्रथम सेमेस्टर

प्रथम प्रश्न–पत्र

भक्ति–काव्य

पाठ्यक्रम संख्या : HIPATT1

भक्ति काव्य का अध्ययन मध्ययुगीन भारतीय समाज के भीतर प्रवाहित हो रही लोकजागरण की उस सामाजिक चेतना का अध्ययन है, जिसकी भित्ति पर आधुनिक भारत में जनतांत्रिक वैज्ञानिक चेतना का विकास हुआ है।

कबीर :

- रहना नहिं देस बिराना है
- बहुरि नहिं आवना या देस
- बांगड़ देस लुवन का घर है
- साधो, देखो जग बौराना
- झीनी-झीनी बीनी चदरिया
- हमन हैं इश्क मस्ताना

मलिक मोहम्मद जायसी :

- पद्मावत (बारहमासा)

मीरा :

- नहिं सुख भावै, थारो देसलड़ो रंगरूड़ो
- सिसोदद्यो रूठयो तो म्हांरो काई करलेसी
- आज अनारी ले गयो सारी, बैठी कदम की डारी

रसखान :

- मानुष हौं तो वही रसखान
- सेष, गनेस, महेस, दिनेस, सुरेसहु जाहि निरंतर गावैं
- ब्रह्म में ढूँढयो पुरानन-गानन

सूरदास :

- आयो घोष बड़ो व्यापारी
- निरखत अंक स्याम सुंदर के बारबार लावति छाती
- ऊधो, मन माने की बात
- मेरो मन अनत कहाँ सुख पावै
- अति मलिन वृषभानु कुमारी

तुलसीदास (कवितावली) :

- धूत कहौ, अवधूत कहौ, रजपूत कहौ, जोलहा कहौ कोऊ
- किसबी, किसान-कुल बनिक, भिखारी भाट
- खेती न किसान को, भिखारी को न भीख, बलि
- मेरे जाति-पाँति न चहौ काहू की जाति-पाँति
- जागैं जोगी-जंगम, जती-जमाती ध्यान धरैं

हिंदीतर :

- दिव्य प्रबंध : आलवार (अनुदित) : तिरुविरुत्तम

सहायक ग्रंथ :

1. 'कबीर' : (सं.) हजारीप्रसाद द्विवेदी : राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
2. 'कबीर ग्रंथावली' : (सं.) श्यामसुंदर दास : लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
3. 'दूसरी परम्परा की खोज' : नामवर सिंह : राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
4. 'भक्ति आन्दोलन और सूर का काव्य' : मैनेजर पाण्डेय : वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।
5. 'भक्ति आन्दोलन और भक्ति काव्य' : शिवकुमार मिश्र : लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
6. 'मीरा का काव्य' : विश्वनाथ त्रिपाठी : वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।
7. 'जायसी ग्रंथावली' : आ. रामचंद्र शुक्ल (सं.) : वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।
8. 'जायसी : विजयदेव नारायण साही' : हिंदुस्तानी एकेडमी, इलाहाबाद।
9. 'त्रिवेणी' : आ. रामचंद्र शुक्ल : नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी।
10. 'लोकजागरण और हिंदी साहित्य' : रामविलास शर्मा : राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
11. 'दिव्य प्रबंध' : (सं.) रामसिंह तोमर, विश्वभारती शान्तिनिकेतन, पश्चिम बंगाल।

स्नातकोत्तर प्रथम सेमेस्टर

द्वितीय प्रश्न-पत्र

हिंदी निबंध

पाठ्यक्रम संख्या : HIPATT2

1857 में प्रथम भारतीय स्वतंत्रता संघर्ष की अनुगूँज हिन्दी और अन्य भारतीय भाषाओं में लिखे गए निबंधों में और साहित्य की दूसरी विधाओं में प्रत्यक्ष और परोक्ष रूप से सुनाई देने लगा है। इसका अध्ययन मूलतः स्वतंत्रता संघर्ष के विकास का भी अध्ययन है।

- ❖ बालमुकुन्द गुप्त :- शिवशम्भू के चिट्ठे
- ❖ भारतेंदु हरिश्चंद्र :- स्वर्ग लोक में विचार सभा का अधिवेशन
- ❖ आचार्य रामचंद्र शुक्ल :- मानस की धर्म भूमि
- ❖ आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी :- अशोक के फूल
- ❖ रामविलास शर्मा :- अट्ठावन : नारियल वाली गली
- ❖ मुक्तिबोध :- भक्ति आंदोलन : एक पहलू
- ❖ नामवर सिंह :- केवल जलती मशाल
- ❖ विद्यानिवास मिश्र :- शेफाली झर रही है

❖ **हिंदीत्तर :**

- ज्योतिबा फुले :- गुलामगिरी
- श्यामा चरण दुबे :- इतिहास-बोध
- एम. एन. श्रीनिवास :- संस्कृतीकरण

सहायक ग्रंथ :

1. निराला की साहित्य साधना : भाग -1 एवं 2 : रामविलास शर्मा : राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
2. भारतेंदु हरिश्चंद्र और हिंदी नवजागरण की समस्याएँ' : रामविलास शर्मा : राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
3. चिंतामणि, भाग -1 : आ. रामचंद्र शुक्ल : लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
4. समीक्षा की समस्याएं : गजानन माधव मुक्तिबोध : राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
5. कविता के नए प्रतिमान : नामवर सिंह : राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
6. गुलामगिरी : ज्योतिबा फुले : फारवर्ड प्रेस, नई दिल्ली।
7. समय और संस्कृति : श्यामा चरण दुबे : वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।
8. आधुनिक भारत में सामाजिक परिवर्तन : एम. एन. श्रीनिवास : राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।

स्नातकोत्तर प्रथम सेमेस्टर

तृतीय प्रश्न-पत्र

हिंदी साहित्य का इतिहास (आरम्भ से रीतिकाल)

पाठ्यक्रम संख्या : HIPATT3

किसी भी तरह के अनुशासन के व्यवस्थित अध्ययन के लिए उसके इतिहास का अध्ययन बेहद आवश्यक है। हिन्दी साहित्य के इतिहास से हमें समाज और साहित्य की संक्रमणकालीन दशा और उसके विकास की दिशा को समझने में मदद मिलेगी।

प्रथम इकाई

हिंदी साहित्य इतिहास लेखन की परंपरा, काल विभाजन एवं नामकरण, आदिकालीन साहित्यिक परंपराएं- सिद्ध, नाथ एवं जैन, प्रमुख रासो काव्य और उनकी प्रामाणिकता, अमीर खुसरो की हिंदी कविता, विद्यापति और उनकी पदावली (वंशी माधुरी : i. नंदक नंदन, ii. सुन रसिया, रूप वर्णन : iii. सैसव जोवन, iv. खने-खने नयन, विरह वर्णन : v. मधुपुर मोहन गेल, vi. अंकुर तपन ताप)।

द्वितीय इकाई

भक्ति आंदोलन : सामाजिक-सांस्कृतिक पृष्ठभूमि, भक्ति आंदोलन और लोक जागरण, भक्ति आंदोलन का अखिल भारतीय स्वरूप, भक्ति आंदोलन और हिंदी प्रदेश।

तृतीय इकाई

भक्ति काल की सामान्य विशेषताएं, प्रमुख निर्गुण संत कवि, प्रमुख सगुण भक्त कवि, भारत में सूफी मत का उदय और विकास, हिंदी के प्रमुख सूफी कवि और काव्य ग्रंथ, सूफी काव्य धारा की सामान्य विशेषताएं।

चतुर्थ इकाई

रीतिकाल की ऐतिहासिक, सामाजिक पृष्ठभूमि, प्रमुख रीति कवि, रीति काव्य की सामान्य विशेषताएं।

सहायक ग्रंथ :

1. हिंदी साहित्य का इतिहास : आचार्य रामचंद्र शुक्ल : लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
2. हिंदी साहित्य और संवेदना का विकास : रामस्वरूप चतुर्वेदी : लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
3. भक्ति आन्दोलन और सूर का काव्य : मैनेजर पाण्डेय : वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।
4. कबीर : (सं.) हजारीप्रसाद द्विवेदी : राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
5. त्रिवेणी : आचार्य रामचंद्र शुक्ल : नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी।
6. हिंदी साहित्य का दूसरा इतिहास : डॉ. बच्चन सिंह : राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली।
7. साहित्यिक निबंध : गणपतिचन्द्र गुप्त : राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
8. विद्यापति : डॉ. शिवप्रसाद सिंह : लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।

स्नातकोत्तर प्रथम सेमेस्टर

चतुर्थ प्रश्न–पत्र

भारतीय भाषाओं की कहानियाँ

पाठ्यक्रम संख्या : HIPATT4

साहित्य में यथार्थवाद के विकास की विभिन्न मंजिलों को समझने के लिए हिन्दी तथा अन्य भारतीय भाषाओं के कथा साहित्य का अध्ययन उस सामाजिक यथार्थ का अध्ययन है जिसको आधार बनाकर स्वतंत्रता पूर्व औपनिवेशिक भारत के स्वरूप और स्वातंत्र्योत्तर भारत में अनौपनिवेशीकरण की प्रक्रिया का समाजशास्त्रीय अध्ययन सम्भव है।

❖ बांग्ला	: ताराशंकर बंधोपाध्याय	:	अभागों का स्वर
❖ असमी	: इंदिरा गोस्वामी	:	पुत्र कामना
❖ उर्दू	: मंटो	:	टोबा टेक सिंह
❖ कन्नड़	: यू. आर. अनंतमूर्ति	:	माँ
❖ उड़िया	: लक्ष्मीकांत महापात्रा	:	बूढ़ा मनिहार
❖ मराठी	: शंकर पाटील	:	रोटी का स्वाद
❖ हिंदी	: प्रेमचंद	:	मुक्ति मार्ग
	: हरिशंकर परसाई	:	भोलाराम का जीव
❖ पंजाबी	: करतार सिंह दुग्गल	:	अपरिचित परिचित चेहरा
❖ तमिल	: आर. चूड़ामणि	:	डॉक्टरनी का कमरा
❖ मलयालम	: तकषी शिवशंकर पिल्लै	:	तहसीलदार के पिता

सहायक ग्रंथ :

1. भारतीय श्रेष्ठ कहानियाँ, भाग : 1 एवं 2 : (सं.) सन्हैयालाल ओझा : लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
2. विवेक के रंग : देवीशंकर अवस्थी : भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नई दिल्ली।
3. कहानी : नई कहानी : नामवर सिंह : लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
4. नई कहानी : सन्दर्भ और प्रकृति : देवीशंकर अवस्थी : राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
5. एक दुनिया : समानांतर : राजेन्द्र यादव, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली।
6. हिंदी कहानी का विकास : मधुरेश : लोकभारती प्रकाशन, नई दिल्ली।
7. हिंदी कहानी का समकाल : अंकित नरवाल : आधार प्रकाशन पंचकूला।
8. कहानी : विचारधारा और यथार्थ : वैभव सिंह : वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।
9. नई सदी का पंचतंत्र : उदय प्रकाश : वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।

स्नातकोत्तर प्रथम सेमेस्टर

वैकल्पिक /स्वाध्याय पाठ्यक्रम/कौशल विकास

OPEN Elective

प्रश्न पत्र : हिंदी भाषा

पाठ्यक्रम संख्या : HIPATL1

आधार पाठ्यक्रम के रूप में तैयार किये गए इस प्रश्नपत्र के माध्यम से हम विद्यार्थियों में हिंदी के सर्जनात्मक साहित्य के साथ-साथ उसके कलारूपों की सामान्य समझ विकसित कर सकेंगे।

- रस, अलंकार, शब्द शक्ति
- संप्रेषण की अवधारणा और महत्व, सम्प्रेषण तकनीक

साहित्य की विधाएँ

कहानियां :

I. पुरस्कार : जयशंकर प्रसाद

II. उसने कहा था : चंद्रधर शर्मा गुलेरी

कविताएँ :

I. जौहर (आरंभिक अंश-वंदना) : श्याम नारायण पाण्डेय

II. कामायनी (चिंता सर्ग) : जयशंकर प्रसाद

सहायक ग्रंथ :

1. सामान्य हिंदी : ओमकारनाथ शर्मा : अरिहंत प्रकाशन
2. कामायनी : जयशंकर प्रसाद : राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
3. नई कहानी : सन्दर्भ और प्रकृति : देवीशंकर अवस्थी : राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
4. एक दुनिया : समानांतर : राजेन्द्र यादव : राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली।
5. नयी कविता : एक साक्ष्य : रामस्वरूप चतुर्वेदी : लोकभारती प्रकाशन, इलाहबाद।
6. आधुनिक साहित्य की प्रवृत्तियां : नामवर सिंह : लोकभारती प्रकाशन, इलाहबाद।

स्नातकोत्तर द्‌वितीय सेमेस्टर

प्रथम प्रश्न-पत्र

कथा साहित्य (उपन्यास एवं नाटक)

पाठ्यक्रम संख्या : HIPBTT1

आधुनिक भारत के सौ सालों की सामाजिक, राजनीतिक स्थितियों-परिस्थितियों, समाज की छोटी इकाई के रूप में परिवारों की संरचना में आ रहे बदलावों, उसके यथार्थ का अध्ययन करने के लिए इस प्रश्न पत्र का विशेष महत्त्व है।

- भारतेंदु हरिश्चंद्र : अंधेर नगरी
- जयशंकर प्रसाद : ध्रुवस्वामिनी
- धर्मवीर भारती : अंधा युग
- मोहन राकेश : आधे अधूरे
- हबीब तनवीर : चरणदास चोर
- शंकर शेष : एक और द्रोणाचार्य
- प्रेमचंद : गोदान
- फणीश्वरनाथ रेणु : मैला आंचल
- भीष्म साहनी : तमस

सहायक ग्रंथ :

1. 'रंगमंच की कहानी' : देवेन्द्र राज अंकुर : वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।
2. 'आधुनिक हिंदी नाटक और रंगमंच' : नेमिचन्द जैन : मैकमिलन प्रकाशन, नई दिल्ली।
3. 'रंगमंच का सौन्दर्यशास्त्र' : देवेन्द्र राज अंकुर : वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।
4. 'हिंदी नाटक के सौ बरस' : अजित पुष्कल : शिल्पायन प्रकाशन, दिल्ली।
5. 'हिंदी नाटकों का आत्मसंघर्ष' : गिरीश रस्तोगी : लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
6. 'उपन्यास और वर्चस्व की सत्ता' : वीरेंद्र यादव : राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
7. 'परम्परा का मूल्यांकन' : रामविलास शर्मा : राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
8. 'हिंदी उपन्यास : एक अंतर्यात्रा' : रामदरश मिश्र : राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
9. 'उपन्यास की भारतीयता और हिंदी आलोचना' : शम्भुनाथ मिश्र : ज्ञान भारती प्रकाशन, दिल्ली।

स्नातकोत्तर द्वितीय सेमेस्टर

द्वितीय प्रश्न-पत्र

रीतिकाव्य

पाठ्यक्रम संख्या : HIPBTT2

उत्तर मध्ययुग की इस प्रमुख काव्यधारा का अध्ययन इस दृष्टि से अत्यधिक महत्त्वपूर्ण है यहां समाज के उच्चवर्ग की क्षयिष्णु और कुलीन अभिरुचियों के समानांतर उस जनकाव्य की धारा का स्रोत मिलना शुरू हो गया था, कालांतर में जिसका विकास आधुनिक युग के साहित्य की अलग-अलग विधाओं में एक साथ हो रहा था।

बिहारी

- छुटी न सिसुता की झलक
- कुटिल अलक छुटि परत
- निसि अंधियारी नील पर
- बतरस लालच लाल की
- कहत नटत रीझत खिझत
- पत्रा ही तिथि पाइए
- इत आवति चलि जात
- छकि रसाल सौरभ सने
- सघन कुंज छाया सुखद
- चुवत स्वेद मकरंद कन
- पट पांखै भखु

देव

- धार में धाई धँसी
- लोग लुगाइन होरी लगाई
- सांझ ही स्याम को लैन गई
- माखन सो मन दूध सो जोवन है
- आइहौं देखि बधू इक देव सो

आलम

- जा थल कीन्हें विहार अनेकन
- सित रितु भीत भई
- लता प्रसून डोल बोल कोकिला अलाप केकि
- आइ सीरी साँझ भीर गैयाँ दौरी आई घर

घनानंद

- पहिले अपनाय सुजान सनेह सों
- रावरे रूप की रीति अनूप
- अति सूधो सनेह को मारगु हैं
- हीन भय जल मीन अधीन
- चंद चकोर की चाह करै

केशव

- रामचंद्रिका : पंचवटी (वन वर्णन)

नजीर अकबराबादी

- श्री कृष्ण का बालपन
- आदमीनामा
    - दुनिया में बादशाह है सो है वह आदमी
    - यां आदमी ही नार है और आदमी ही नूर
    - मस्जिद भी आदमी ने बनाई है
    - बैठे हैं आदमी ही दुकानें लगा लगा
    - मरने पै आदमी ही कफ़न करते हैं तैयार

सहायक ग्रंथ :

1. 'रीतिकाव्य की भूमिका' : डॉ. नगेन्द्र : नेशनल पब्लिकेशन हाउस, दिल्ली।
2. 'हिंदी साहित्य का इतिहास' : आचार्य रामचंद्र शुक्ल : लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
3. 'हिंदी साहित्य का अतीत', भाग – 1 एवं 2 : विश्वनाथ प्रसाद मिश्र : वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।
4. 'हिंदी साहित्य का दूसरा इतिहास' : बच्चन सिंह : वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।
5. 'नजीर अकबराबादी और उनकी शायरी' : प्रकाश पंडित : राजपाल एंड संस, दिल्ली।
6. 'दीवान –ए –मीर' : सं. अली सरदार जाफ़री : वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।
7. 'उर्दू आलोचना के शिखर पुरुष' : शम्सुर्रहमान फारूकी : भारतीय ज्ञानपीठ, दिल्ली।
8. 'उर्दू साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास' : सैय्यद एहतेशाम हुसैन : लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
9. 'बिहारी का नया मूल्यॉंकन' : डॉ. बच्चन सिंह : हिंदी प्रचारक पुस्तकालय, वाराणसी।

स्नातकोत्तर द्वितीय सेमेस्टर

तृतीय प्रश्न-पत्र (वैकल्पिक)

हिंदी साहित्य का इतिहास (आधुनिक काल)

पाठ्यक्रम संख्या : HIPBTD1

हिन्दी साहित्य के आधुनिक काल का इतिहास वास्तव में आधुनिक भारत के इतिहास का भी अध्ययन है। प्रथम स्वाधीनता संघर्ष से लेकर आजादी और फिर उसके बाद के राजनीतिक उतार चढ़ाव की समग्र सामाजिक, राजनीतिक पृष्ठभूमि का ब्यौरेवार अध्ययन इस प्रश्न पत्र की विशेषता है।

प्रथम इकाई

आधुनिकता की अवधारणा, हिंदी गद्य एवं आधुनिकता का अंतर्संबंध, हिंदी-उर्दू विवाद, खड़ी बोली के विकास की पृष्ठभूमि।

द्वितीय इकाई

नवजागरण की संकल्पना और हिंदी नवजागरण, हिंदी पत्रकारिता की विकास यात्रा, हिंदी की जातीय चेतना के विकास में हिंदी पत्रकारिता की भूमिका।

तृतीय इकाई

भारतेंदु मंडल, भारतेंदु युगीन प्रमुख पत्र पत्रिकाएं, भारतेंदु युगीन साहित्यिक प्रवृत्तियां एवं विभिन्न गद्य विधाओं का उदय और विकास, द्विवेदी युग : ऐतिहासिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक परिस्थितियां, हिंदी नवजागरण और सरस्वती पत्रिका, मैथिलीशरण गुप्त और राष्ट्रीय काव्यधारा।

चतुर्थ इकाई

प्रेमचंद युग, छायावाद, प्रसाद युग, प्रगतिशील साहित्य की प्रवृतियां, समकालीन साहित्य।

सहायक ग्रंथ :

1. हिंदी का गद्य साहित्य : रामचंद्र तिवारी : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणासी
2. भारतेंदु युग और हिंदी गद्य की विकास परंपरा : रामविलास शर्मा : राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
3. हिंदी पत्रकारिता : कृष्ण बिहारी मिश्र : भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन
4. महावीर प्रसाद द्विवेदी और हिंदी नवजागरण : रामविलास शर्मा : राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
5. भारतीय हिंदू एवं द्विवेदी युगीन भाषा चिंतन और पंडित गोविंद नारायण मिश्र : डॉ. जया सिंह : जयभारती प्रकाशन, लखनऊ
6. आधुनिक साहित्य की प्रवृत्तियां : नामवर सिंह : वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
7. हिंदी आलोचना के बीज शब्द : बच्चन सिंह : वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
8. हिंदी आलोचना की पारिभाषिक शब्दावली' : अमरनाथ : राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली

स्नातकोत्तर द्वितीय सेमेस्टर

तृतीय प्रश्न-पत्र (वैकल्पिक)

भाषा विज्ञान

पाठ्यक्रम संख्या : HIPBTD2

भाषा एक सामाजिक और अर्जित संपत्ति है। भाषा के विकास में सामाजिक विकास एक मुख्य कारक होता है। ध्वनि परिवर्तन, अर्थ परिवर्तन आदि भाषा के नाना रूपों में होने वाले परिवर्तनों के मूल में सामाजिक, भौगोलिक और सांस्कृतिक कारण होते हैं। बोलियों के सामाजिक साहित्यिक योगदान में राजनीति आदि की भूमिका उसके स्वरूप का व्यापक अध्ययन इस प्रश्न पत्र की विशेषता है।

प्रथम इकाई

भाषा की परिभाषा, तत्व, अंग और विशेषताएं, भाषा परिवर्तन के कारण एवं दिशाएं, साहित्यिक हिंदी के रूप में खड़ी बोली का उदय और विकास

द्वितीय इकाई

स्वनिम विज्ञान : परिभाषा, स्वन, सस्वन, स्वनिम, स्वन भेद, मानस्वर, स्वन परिवर्तन के कारण एवं दिशाएं, रूपिम विज्ञान : शब्द और रूप, संबंध तत्व और अर्थ तत्व, रूप, संरूप, रूपिमों का स्वरूप, रूपिमों का वर्गीकरण

तृतीय इकाई

वाक्य विज्ञान : वाक्य की परिभाषा एवं स्वरूप, वाक्य रचना, वाक्य के प्रकार, वाक्य परिवर्तन के कारण एवं दिशाएं, अर्थ विज्ञान : शब्द और अर्थ का संबंध, अर्थ परिवर्तन के कारण एवं दिशाएं

चतुर्थ इकाई

हिंदी की बोलियाँ : वर्गीकरण तथा क्षेत्र, नागरी लिपि: वैज्ञानिकता और विकास, देवनागरी लिपि का मानकीकरण, राजभाषा हिंदी की संवैधानिक स्थिति

सहायक ग्रंथ :

1. 'हिंदी भाषा' : हरदेव बाहरी : अभिव्यक्ति पब्लिकेशन, जोधपुर।
2. 'भाषा विज्ञान' : भोलानाथ तिवारी : किताब महल, इलाहाबाद।
3. 'भाषा विज्ञान की भूमिका' : देवेंद्र नाथ शर्मा : राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली।
4. 'हिंदी शब्द अनुशासन' : किशोरी दास वाजपेई : नगरी प्रचारिणी सभा, काशी।
5. 'भारत की भाषा समस्या' : रामविलास शर्मा : राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
6. 'हिंदी व्याकरण' : कामता प्रसाद गुरु : पराग प्रकाशन, दिल्ली।

स्नातकोत्तर द्वितीय सेमेस्टर

Open Elective

हिंदी भाषा

पाठ्यक्रम संख्या : HIPBTO1

हिन्दी भाषी प्रदेशों में उच्च शिक्षाप्राप्त विद्यार्थियों से न्यूनतम अपेक्षा है कि वे अपनी भाषा की सामान्य विशेषताओं, लिपि और उसकी संवैधानिक स्थिति आदि के साथ-साथ उसके साहित्य से उनका सामान्य परिचय जरूर हो। इसे ही ध्यान में रखकर यह आधार पाठ्यक्रम तैयार किया गया है।

- हिंदी की व्युत्पत्ति, भाषा की परिभाषा, प्रकृति एवं विविध रूप
- हिंदी भाषा की विशेषताएं
- हिंदी की बोलियाँ, वर्गीकरण क्षेत्र
- देवनागरी लिपि का विकास और मानकीकरण
- राजभाषा हिंदी की संवैधानिक स्थिति

साहित्य खंड :

कहानियां :
- भोलाराम का जीव : हरिशंकर परसाई
- टोबा टेकसिंह : मंटो

उपन्यास :
- रागदरबारी : श्रीलाल शुक्ल

कविताएँ :
- सतपुड़ा के घने जंगल : भवानी प्रसाद मिश्र
- भागी हुई लड़कियां : आलोकधन्वा

सहायक ग्रंथ :

1. आधुनिक हिंदी व्याकरण और रचना : वासुदेव नंदन प्रसाद : भारती भवन प्रकाशन।
2. सामान्य हिंदी एवं संक्षिप्त व्याकरण : ब्रजकिशोर प्रसाद सिंह : यूनिकॉर्न बुक्स नई दिल्ली।
3. नई कहानी : सन्दर्भ और प्रकृति : देवीशंकर अवस्थी : राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
4. एक दुनिया : समानांतर : राजेन्द्र यादव : राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली।
5. 'नयी कविता : एक साक्ष्य' : रामस्वरूप चतुर्वेदी : लोकभारती प्रकाशन, इलाहबाद।
6. 'कहानी : नयी कहानी' : नामवर सिंह : लोकभारती प्रकाशन, इलाहबाद।
7. 'भाषा और समाज' : रामविलास शर्मा : राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
8. 'शब्दानुशासन' : किशोरीदास वाजपेयी, नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी।

स्नातकोत्तर तृतीय सेमेस्टर

प्रथम प्रश्न–पत्र

आदिकालीन काव्य

पाठ्यक्रम संख्या : HIPCTT1

हिन्दी भाषा के पूर्ववर्ती रूप अपभ्रंश, जिसके लिखित रूप से ही हिन्दी साहित्य का व्यवस्थित इतिहास शुरू होता है, का अध्ययन हिन्दी साहित्य के विकास की दिशा और विभिन्न कालावधियों में उसकी प्रवृत्तियों का अध्ययन, उसके सामाजिक संदर्भों को जानने के लिए आवश्यक है।

- सरहपा : दोहा कोश (5 दोहे)
  1. जाव ण आप जणिज्जइ..., 2. जहि मण पवण ण संचरइ..., 3. आइ ण अंत ण मज्झ णउ..., 4.विसअ विसुद्धे णउ रमइ..., 5. अक्खर बाढ़ा सअल जगु... ।
- अद्दहमाण : सन्देश रासक (द्वितीय प्रक्रम:)
- चंदबरदाई : पृथ्वीराज रासो (कयमास वध)
- विद्यापति : पदावली (सं. शिवप्रसाद सिंह)
  रूप वर्णन- 10,11, 12, 13, 16. विरह – 54, 56 .
- अमीर खुसरो : 1. खुसरो रैन सुहाग की..., 2. खुसरो दरिया प्रेम का..., 3. खीर पकायी जतन से..., 4. गोरी सोवे सेज पर..., 5. खुसरो मौला के रुठते
  गीत – जेहाल मिस्कीं, काँहें को ब्याहे बिदेस, खुसरो रैन सुहाग की ।

सहायक ग्रंथ :

1. हिंदी के विकास में अपभ्रंश का योग : नामवर सिंह : राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
2. सन्देश रासक : हजारी प्रसाद द्विवेदी : राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
3. विद्यापति पदावली : (सं.) शिवप्रसाद सिंह : लोकभारती प्रकाशन, इलाहबाद।
4. हिंदी साहित्य का इतिहास : आचार्य रामचंद्र शुक्ल : प्रभात प्रकाशन, म.प्र.।
5. हिंदी साहित्य का आदिकाल : हजारी प्रसाद द्विवेदी : वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।
6. हिंदी साहित्य की भूमिका : हजारी प्रसाद द्विवेदी : राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
7. हिंदी साहित्य का दूसरा इतिहास : बच्चन सिंह : राधा कृष्ण प्रकाशन दिल्ली।
8. पृथ्वीराज रासो : सं. हजारी प्रसाद द्विवेदी नामवर सिंह, साहित्य भवन, इलाहाबाद।
9. अमीर खुसरो : परमानंद पांचाल भोलानाथ तिवारी , प्रभात प्रकाशन दिल्ली।

स्नातकोत्तर तृतीय सेमेस्टर

द्वितीय प्रश्न–पत्र

आधुनिक काव्य

पाठ्यक्रम संख्या : HIPCTT2

20वीं सदी में भारतीय समाज के लगभग प्रत्येक क्षेत्र में मध्यवर्ग की प्रभावी भूमिका बनने लगी थी। समाज को देखने का उसका यथार्थवादी दृष्टिकोण, नैतिकता, आदर्शपरक जीवन-मूल्य, कल्पनाशीलता, वैचारिक आग्रह आदि इस युग की आधुनिक काव्य में नाना शिल्प विधान के साथ मूर्तमान हो उठे थे। इस प्रश्न पत्र का अध्ययन बीसवीं सदी के ऐतिहासिक, सामाजिक और राजनीतिक हलचलों का एक साथ अध्ययन होगा।

- मुकुटधर पांडेय : ग्राम्य जीवन
- मैथिलीशरण गुप्त : पंचवटी वर्णन (चारु चंद्र की चंचल किरणें)
- जयशंकर प्रसाद : इड़ा (सर्ग)
- सूर्यकांत त्रिपाठी निराला : सरोज स्मृति
- सुमित्रानंदन पंत : नौका विहार
- महादेवी वर्मा : मैं नीर भरी दुख की बदली, पंथ होने दो अपरिचित
- रामधारी सिंह दिनकर : कुरुक्षेत्र (पहला सर्ग)
- माखनलाल चतुर्वेदी : अमर राष्ट्र
- भवानी प्रसाद मिश्र : सतपुड़ा के घने जंगल
- रवींद्रनाथ टैगोर : अहल्या के प्रति (हिंदीत्तर काव्य)

सहायक ग्रंथ :

1. 'छायावाद' : नामवर सिंह : राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
2. 'आधुनिक साहित्य की प्रवृत्तियां' : नामवर सिंह : लोकभारती प्रकाशन, इलाहबाद।
3. 'कविता के नए प्रतिमान' : नामवर सिंह : राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
4. 'कविता समय' : डॉ. गौरी त्रिपाठी : उत्कर्ष प्रकाशन, कानपुर।
5. 'नयी कविता और अस्तित्ववाद' : रामविलास शर्मा : राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
6. 'कविता का जनपद' : अशोक वाजपेयी : राधाकृष्णन प्रकाशन, दिल्ली।
7. 'नयी कविता : एक साक्ष्य' : रामस्वरूप चतुर्वेदी : लोकभारती प्रकाशन, इलाहबाद।
8. 'समकालीन कविता का व्याकरण' : परमानंद श्रीवास्तव : शुभदा प्रकाशन, दिल्ली।
9. 'कामायनी : एक पुनर्विचार' : मुक्तिबोध, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।

स्नातकोत्तर तृतीय सेमेस्टर

तृतीय प्रश्न-पत्र (वैकल्पिक)

आधुनिक विमर्श

पाठ्यक्रम संख्या : HIPCTD1

बीसवीं सदी के अंतिम दशक से विश्व स्तर पर शीतयुद्ध की समाप्ति, भूमंडलीकरण और बाजारवाद के वर्चस्व की वजह से साहित्य और समाज में उत्तर आधुनिक युग का प्रारंभ हुआ। साहित्य में सबाल्टर्न डिस्कोर्स की पृष्ठभूमि बननी शुरू हुई। जो अबतक हाशिये पर थे वे केंद्र बनने लगे। दलित विमर्श, स्त्री विमर्श, आदिवासी विमर्श आदि की वैचारिकी उसकी परंपरा आदि का अध्ययन इस प्रश्न पत्र की विशेषता है।

प्रथम इकाई

- दलित विमर्श : सामाजिक पृष्ठभूमि, वैचारिकी के प्रश्न, दलित अस्मिता
- स्त्री विमर्श : सामाजिक पृष्ठभूमि, अवधारणा एवं स्त्री मुक्ति संबंधी चिंतन : जॉन स्टुअर्ट मिल, सीमोन द बोउवार, महादेवी वर्मा

द्वितीय इकाई

आदिवासी विमर्श : पृष्ठभूमि, अवधारणा, आदिवासी लेखन एवं वैचारिकी के आयाम, प्रमुख आदिवासी विमर्शकार

तृतीय इकाई

कहानी :

ठाकुर का कुआं : प्रेमचंद
गोमा हँसती है : मैत्रेयी पुष्पा

उपन्यास :

आधा शहर : उषा प्रियंवदा

चतुर्थ इकाई

आत्मकथा :

अन्या से अनन्या : प्रभा खेतान
जूठन : ओमप्रकाश वाल्मिकी

निबंध :

शृंखला की कड़ियाँ : महादेवी वर्मा

सहायक ग्रंथ :

1. दलित साहित्य का सौंदर्यशास्त्र : ओमप्रकाश वाल्मिकि : वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।
2. साहित्य के समाजशास्त्र की भूमिका : मैनेजर पाण्डेय वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।
3. जाति व्यवस्था : सच्चिदानंद सिन्हा : राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली ।
4. नारी प्रश्न : सरला महेश्वरी : राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली।
5. स्त्री विमर्श भारतीय परिप्रेक्ष्य : डॉ.के.एम.मालती : वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।
6. बाजार के बीच : बाजार के खिलाप : प्रभा खेतान : वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।
7. आधुनिकता के आईने में दलित : सं. अभय कुमार दुबे : वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।
8. सामाजिक न्याय और दलित साहित्य : सं. श्योराज सिंह बैचेन : वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।

स्नातकोत्तर तृतीय सेमेस्टर

तृतीय प्रश्नपत्र : (वैकल्पिक)

प्रयोजनमूलक हिंदी

पाठ्यक्रम संख्या : HIPCTD2

सरकारी कार्यालयों में प्रयुक्त होने वाली शब्दावलियां परंपरागत हिंदी के व्यवहार में नहीं रही हैं, इसके अलावा आज हिन्दी अनिवार्य रूप से बाजार तथा संचार माध्यमों की भाषा बनती जा रही है। इन सारी चुनौतियों को देखते हुए नये विभिन्न भाषाओं के प्रचलित शब्दभंडार को हिंदी भाषा के व्यवहार में अपनाते हुए उनका मानकीकरण इस पाठ्यक्रम की विशेषता है।

- मातृभाषा एवं अन्य भाषा के रूप में हिन्दी, संपर्क भाषा, राजभाषा के रूप में हिन्दी, बोलचाल की सामान्य हिन्दी, मानक हिन्दी और साहित्यिक हिन्दी, संविधान में हिन्दी।
- हिंदी की शैलियाँ : हिन्दी, उर्दू और हिन्दुस्तानी।
- हिन्दी भाषा का उद्भव और विकास।
- हिन्दी का मानकीकरण।
- पारिभाषिक शब्दावली – स्वरूप एवं महत्त्व, पारिभाषिक शब्दावली के उदाहरण और व्यावहारिक प्रयोग।
- हिन्दी का प्रयोग क्षेत्र : भाषा प्रयुक्ति की संकल्पना, वार्ता-प्रकार और शैली।
- प्रयोजनमूलक हिन्दी के प्रमुख प्रकार : कार्यालयी हिन्दी और उसके प्रमुख लक्षण, वैज्ञानिक हिन्दी और उसके प्रमुख लक्षण, व्यावसायिक हिन्दी और उसके प्रमुख लक्षण, संचार माध्यम (आकाशवाणी, दूरदर्शन, चलचित्र) की हिन्दी और उसके प्रमुख लक्षण।
- भाषा व्यवहार : सरकारी पत्राचार टिप्पणी तथा मसौदा-लेखन, सरकारी अथवा व्यावसायिक पत्र-लेखन।
- हिन्दी में पारिभाषिक शब्द निर्माण प्रक्रिया एवं प्रस्तुति।

सहायक ग्रंथ :

1. प्रयोजनमूलक हिन्दी : भोलानाथ तिवारी, वाणी प्रकाशन, दिल्ली।
2. प्रयोजनमूलक हिन्दी : लक्ष्मीकान्त पाण्डेय, प्रमिला अवस्थी, आशीष प्रकाशन, कानपुर।
3. प्रयोजनमूलक हिन्दी : डॉ. रमेशचंद्र त्रिपाठी, अलका प्रकाशन, कानपुर।
4. मीडिया लेखन : सिद्धांत और व्यवहार : डॉ. चंद्रप्रकाश मिश्र, संजय प्रकाशन,नई दिल्ली।
5. मीडिया लेखन और सम्पादन कला : डॉ. गोविन्द प्रसाद,अनुपम पाण्डेय, डिस्कवरी पब्लिशिंग हॉउस, नई दिल्ली।
6. जनसंचार माध्यमों में हिन्दी : डॉ. चन्द्रकुमार, बी.के. तनेजा क्लासिकल पब्लिशिंग कंपनी, नई दिल्ली।

स्नातकोत्तर तृतीय सेमेस्टर

चतुर्थ प्रश्न-पत्र (वैकल्पिक)

जनसंचार माध्यम

पाठ्यक्रम संख्या : HIPCTD3

आधुनिक युग सूचनाक्रान्ति तथा संचार प्रौद्योगिकी के रूप में जाना जा रहा है। हिंदी पत्रकारिता का इतिहास स्वतंत्रता आंदोलन में उसकी भूमिका, आज उसका स्वरूप उसकी चुनौतियां तथा आज के युग में उसकी भूमिका का अध्ययन इस पाठ्यक्रम के माध्यम से संभव हो सकेगा। यह पाठ्यक्रम वैकल्पिक विषय के रूप में मीडिया के नाना रूपों में हिंदी की संभावना के मद्देनजर तैयार किया गया है।

- ❖ भारत में संचार माध्यमों का विकास : प्रिंट, रेडियो, टी.वी., इंटरनेट
- ❖ हिंदी पत्रकारिता का इतिहास और वर्तमान
- ❖ साहित्यिक पत्रकारिता : उद्भव और विकास :- सरस्वती, विशाल भारत, हंस, माधुरी, कल्पना, ज्ञानोदय, कथादेश, पहल, तद्भव।
- ❖ संपादन के आधारभूत तत्व
- ❖ समाचार लेखन, विज्ञापन लेखन, पुस्तक समीक्षा लेखन, साक्षात्कार
- ❖ प्रिंट मीडिया का बदलता स्वरूप
- ❖ पत्रकारिता का प्रतिपक्ष, सोशल मीडिया : दशा और दिशा
- ❖ अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता

सहायक ग्रंथ :

1. हिंदी पत्रकारिता : कृष्णबिहारी मिश्र : प्रभात प्रकाशन, दिल्ली।
2. संचार माध्यमों का वर्ग चरित्र : रेमण्ड विलियम्स : ग्रंथ शिल्पी, (इंडिया) प्राइवेट लिमिटेड, दिल्ली।
3. साक्षात्कार : सिद्धांत और व्यवहार : रामशरण जोशी : हिंदी बुक सेंटर, हैदराबाद।
4. संस्कृति विकास और संचार क्रांति : पी.सी.जोशी : ग्रन्थ शिल्पी, नई दिल्ली।

स्नातकोत्तर तृतीय सेमेस्टर

चतुर्थ प्रश्न-पत्र (वैकल्पिक)

नाटक और हिंदी सिनेमा

पाठ्यक्रम संख्या : HIPCTD4

नाटक साहित्य तथा कला का आदि और अधुनातन स्वरूप है। सिनेमा के रूप में आज इसका बहुत बड़ा बाजार भी है। हिंदी साहित्य की बहुत बड़ी व्यावसायिक संभावना के रूप में स्क्रिप्ट राइटिंग का एक क्षेत्र इस माध्यम से उद्घाटित हो रहा है। इन सबके दृष्टिगत यह प्रश्नपत्र तैयार किया गया है।

- पारसी थियेटर से आधुनिक रंगमंच की विकास यात्रा
- एन.एस.डी. (राष्ट्रीय नाटी विद्यालय) की भूमिका, नुक्कड़ नाटक
- हिंदी सिनेमा का इतिहास
- सिनेमा का बाजार और बाजार में सिनेमा
- सिनेमा और समाज - स्त्री पक्ष, दलित पक्ष, आदिवासी पक्ष
- समानांतर सिनेमा की अवधारणा, लघु वृत्तचित्र
- सिनेमा का बदलता स्वरूप : वस्तु और विन्यास
- पटकथा लेखन, संवाद संयोजन, सिनेमा समीक्षा
- स्थानीय लोककलाओं पर आधारित संक्षिप्त वृत्तचित्र प्रस्तुति (विद्यार्थियों द्वारा)
- साहित्य की विविध विधाओं की कार्यशाला
- फिल्म समीक्षा - खरगोश, रजनीगंधा, मोहल्ला अस्सी

सहायक ग्रंथ :

1. भारतीय सिनेमा का इतिहास : अनिल भार्गव : सिने साहित्य प्रकाशन,जयपुर।
2. हिंदी सिनेमा आदि से अनंत : प्रह्लाद अग्रवाल : साहित्य भंडार, इलाहाबाद।
3. पटकथा लेखन : मनोहर श्याम जोशी : राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
4. कथा-पटकथा : मन्नू भंडारी : वाणी प्रकाशन, दिल्ली।
5. सिनेमा और संस्कृति : राही मासूम रजा : वाणी प्रकाशन, दिल्ली।
6. सिनेमा समय : विष्णु खरे : अनन्या प्रकाशन, नई दिल्ली।

स्नातकोत्तर चतुर्थ सेमेस्टर

प्रथम प्रश्न-पत्र

छायावादोत्तर काव्य

पाठ्यक्रम संख्या : HIPDTT1

छायावादोत्तर युग मूलतः काव्यकला और जीवन संवेदना के रूपों में होने वाले आमूल चूल परिवर्तन के साथ विकसित हुआ है। इस प्रश्नपत्र का अध्ययन आधुनिक सामाजिक संदर्भों और मानव मनोविज्ञान को ध्यान में रखते हुए तैयार किया गया है।

- नागार्जुन : हरिजन गाथा
- मुक्तिबोध : भूल-गलती
- अज्ञेय : असाध्य वीणा
- दुष्यंत कुमार : कहाँ तो तय था चरागाँ, ये सारा जिस्म झुक कर बोझ से
- धूमिल : पटकथा
- आलोकधन्वा : ब्रूनो की बेटियाँ
- श्रीकांत वर्मा : वापसी, तीसरा रास्ता, मगध, हस्तक्षेप

सहायक ग्रंथ :

1. नयी कविता का आत्मसंघर्ष : गजानन माधव मुक्तिबोध : राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
2. एक कवि की नोट बुक : राजेश जोशी : राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
3. तारसप्तक, दूसरा सप्तक, तीसरा सप्तक, चौथा सप्तक : (सं.) अज्ञेय : भारतीय ज्ञानपीठ, नयी दिल्ली।
4. कविता के नए प्रतिमान : नामवर सिंह : राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
5. भवन्ति : अज्ञेय : राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
6. कविता और समय : अरुण कमल : वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।
7. समकालीन कविता का व्याकरण : परमानंद श्रीवास्तव : शुभदा प्रकाशन, दिल्ली।
8. कविता का जनपद : अशोक वाजपेयी : राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली ।

स्नातकोत्तर चतुर्थ सेमेस्टर

द्वितीय प्रश्न–पत्र (वैकल्पिक)

काव्यशास्त्र

पाठ्यक्रम संख्या : HIPDTD1

पाश्चात्य और भारतीय आचार्य कला का मूल्यांकन किन आधारों पर कैसे किया करते थे ? उन मूलभूत आधारों में दृष्टिगत भिन्नता और समानता के तत्वों का अध्ययन इस प्रश्नपत्र की मूल अंतर्वस्तु है।

भारतीय काव्यशास्त्र

प्रथम इकाई

काव्य लक्षण : भामह, मम्मट, विश्वनाथ और पं० जगन्नाथ

काव्य हेतु : प्रतिभा, व्युत्पत्ति और अभ्यास

काव्य प्रयोजन : भारत, भामह, वामन, रुद्रट, कुंतक, मम्मट

द्वितीय इकाई

रस, ध्वनि, अलंकार, रीति, वक्रोक्ति, औचित्य सिद्धांत का सामान्य परिचय

पाश्चात्य काव्यशास्त्र

तृतीय इकाई

प्लेटो : अनुकरण सिद्धांत

अरस्तू : अनुकरण एवं विरेचन

लौंजाइनस : काव्य में उदात्त की अवधारणा

चतुर्थ इकाई

आई०ए० रिचर्ड्स : मूल्य सिद्धांत

बेनेदितो क्रोचे : अभिव्यंजनावाद

टी. एस. इलियट : निर्वैयक्तिकता

सहायक ग्रंथ :

1. भारतीय काव्यशास्त्र : डॉ० नगेंद्र : नेशनल पब्लिसिंग हाउस, दिल्ली।
2. संस्कृत काव्यशास्त्र : बलदेव उपाध्याय : उत्तरप्रदेश हिंदी संस्थान, लखनऊ।
3. काव्यशास्त्र : भगीरथ मिश्र : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणासी।
4. पाश्चात्य साहित्य-चिंतन : निर्मला जैन : राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली।
5. पाश्चात्य काव्यशास्त्र : देवेंद्रनाथ शर्मा : मयूर बुक्स, इंदौर।
6. पाश्चात्य काव्यशास्त्र : भगीरथ मिश्र : राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
7. पाश्चात्य समीक्षा : सिद्धांत और वाद : सूर्य प्रसाद दीक्षित : वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।

स्नातकोत्तर चतुर्थ सेमेस्टर

द्वितीय प्रश्न-पत्र (वैकल्पिक)

लोक-साहित्य

पाठ्यक्रम संख्या : HIPDTD2

लोक जीवन की मौखिक परंपरा में समष्टि की सृजनशीलता के परिणामस्वरूप लोक साहित्य का समृद्ध स्रोत है। किसी भी अंचल के सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन के अध्ययन में ये प्रामाणिक स्रोत तो होते ही हैं, इनमें आधुनिक कला रूपों को विकसित और समृद्ध करने की बड़ी संभावना है।

प्रथम इकाई

लोक साहित्य की अवधारणा, लोक साहित्य की मनोवैज्ञानिक एवं समाजशास्त्रीय व्याख्या, लोकभाषा, परिनिष्ठित भाषा, मानक भाषा की प्रकृति।

द्वितीय इकाई

हिन्दी में लोक साहित्य का इतिहास, मिथक और लोक साहित्य, लोक साहित्य के विविध रूप : लोकगीत, देवीगीत, जन्म एवं मृत्यु संबंधी गीत, विवाह गीत, ऋतुगीत, श्रम गीत।

तृतीय इकाई

लोक नाट्य परम्परा, लोकनाटकों के विविध रूप (क) श्रव्य : लोकगाथा, लोक आख्यान, पंडवानी, आल्हा, चंदैनी (ख) दृश्य : रामलीला, रासलीला, नौटंकी, लावनी, प्रहसन, बिदेसिया, नाचा, खयाल, बारहमासा।

चतुर्थ इकाई

- बिदेसिया : भिखारी ठाकुर
- चरनदास चोर : हबीब तनवीर

- आधारभूत संरचना उपलब्ध होने की स्थिति में प्रस्तुत पाठ्यक्रम के सैद्धांतिक एवं प्रायोगिक (प्रदर्शन) दोनों माध्यम से अध्ययन कराया जायेगा।

सहायक ग्रंथ :

1. लोकसाहित्य की भूमिका : धीरेन्द्र वर्मा : हिन्दुस्तानी एकेडमी, इलाहाबाद
2. लोक साहित्य के प्रतिमान : डॉ. कुंदनलाल उप्रेती : भारत प्रकाशन मंदिर, लखनऊ
3. लोक साहित्य की सांस्कृतिक परम्परा : मनोहर शर्मा : ई-बुक बुक्स सीन हिंदी
4. लोक साहित्य विज्ञान : डॉ. सतेन्द्र : शिवलाल अग्रवाल एंड कंपनी, आगरा
5. भारतीय लोक साहित्य : श्याम परमार : राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।

स्नातकोत्तर चतुर्थ सेमेस्टर

तृतीय प्रश्न पत्र

शोध प्रविधि

पाठ्यक्रम संख्या : HIPDTT2

किसी भी तरह के शोध परक आलेख, लघु शोध प्रवंध हेतु शोध प्रविधियों और उनकी सैद्धांतिक प्रक्रियाओं से अवगत होने के लिए यह प्रश्नपत्र आवश्यक है।

- शोध व्युत्पत्ति और अर्थ, आलोचना, अनुसंधान अन्वेषण एवं शोध का अंतर।
- शोध का प्रयोजन, शोध के मूल तत्व, शोध और सृजनात्मकता।
- शोध के प्रकार : साहित्यिक शोध, पाठ संबंधित शोध, वैज्ञानिक शोध, तुलनात्मक शोध, ऐतिहासिक शोध।
- शोध की प्रक्रिया - विषय चयन, विषय की रूपरेखा, सामग्री संकलन, तथ्य संकलन ।
- शोध का व्यावहारिक पक्ष : अध्ययन क्षेत्र की सीमा, शोध प्रस्ताव, इंडेक्स कार्ड प्रणाली, आधारभूत सामग्री और संदर्भ ग्रंथ सूची, सामग्री संकलन की प्रक्रिया।
- पाठनुसंधान : आशय, स्वरूप और सीमा, पाठ निर्धारण एवं प्रक्रिया।
- सामग्री संकलन के स्रोत - खोज, रिपोर्ट, कैटलॉग पुस्तकें, संस्थान, पाठनुसंधान और पाठालोचन में अंतर, पाठालोचन के मुख्य सिद्धांत।
- संक्षिप्त परिचय- भाषानुसंधान एवं तुलनात्मक अनुसंधान।

सहायक ग्रंथ :

1. शोध प्रविधि : डॉ. विनय मोहन शर्मा : नेशनल प्रकाशन, नई दिल्ली।
2. शोध और सिद्धांत : डॉ. नगेन्द्र : नेशनल प्रकाशन, नई दिल्ली।
3. हिंदी अनुसन्धान : डॉ. विजयपाल सिंह : लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद ।
4. पाठालोचन : डॉ. सियाराम तिवारी : स्मृति प्रकाशन, इलाहाबाद।
5. तुलनात्मक साहित्य की भूमिका : इंद्रनाथ चौधुरी : नेशनल प्रकाशन, नई दिल्ली।

स्नातकोत्तर चतुर्थ सेमेस्टर

चतुर्थ प्रश्न पत्र

लघु शोध-प्रबंध

पाठ्यक्रम संख्या : HIPDLD1

यह प्रश्नपत्र छात्र द्वारा समस्त अर्जित ज्ञान सम्पदा की प्रामाणिक प्रस्तुति के साथ ही अगर वह कभी भविष्य में कोई शोध करना चाहता है, तो यह उसकी पूर्व पीठिका भी है।

- ❖ साहित्य का समाजशास्त्रीय अध्ययन

  अथवा

- ❖ साहित्य की व्यावसायिक संभावनाओं के सन्दर्भ में से किसी एक विषय का चयन

  - ➢ विषय का चयन छात्र तथा संबद्ध अध्यापक के विचार-विमर्श से तैयार करके विभागीय समिति द्वारा अनुमोदित किया जाएगा। विभागीय समिति में विभाग के समस्त अध्यापक उपस्थित रहेंगे जिसकी अध्यक्षता पदेन विभागाध्यक्ष करेगा।

Gmail

in:sent

Compose

Inbox 75
Starred
Snoozed
Important
Chats
Sent
Scheduled
More

Meet
New meeting
Join a meeting

Hangouts
Hod

No recent chats
Start a new one

पाठ्यक्रम एम.ए.हिंदी 2021-22

Inbox ×

Hod Hindi <hodhindiggv@gmail.com>
to Khemsingh.daheriya, muralibhuhindi, bcc: rameshggvhindi

2 Attachments

गुरु घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर (छ.ग.)
हिंदी विभाग
(कला अध्ययनशाला)
पाठ्यक्रम 2020-21....

गुरु घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर (छ.ग.)
हिंदी विभाग
(कला अध्ययनशाला)
पाठ्यक्रम.docx

2

khemsingh Dahariya <khemsingh.daheriya@gmail.com>
to me

Hindi English Translate message

उक्त पाठ्यक्रम अनुमोदित।

Hod Hindi <hodhindiggv@gmail.com>
to khemsingh.daheriya

Regards,

Prof. Devendra Nath Singh
Head
*Department of Hindi *
Guru Ghasidas Vishwavidyalaya,
Bilaspur (CG)- India,495009
Wesite- www.ggu.ac.in